श्रीहरिः

कविता और भजनोंकी पुस्तकें

१-**विनय-पत्रिका**-सटीक, सचित्र, पृष्ठ ४७२, मूल्य ... १.००
२-**गीतावली**-सटीक, सचित्र, पृष्ठ ४४४, मूल्य ... १.००
३-**सूर-विनय-पत्रिका**-सटीक, सचित्र, पृष्ठ ३२४, मूल्य ... .८७
४-**सूर-राम-चरितावली**-सटीक, सचित्र, पृष्ठ २६४, मूल्य ... .७०
५-**श्रीकृष्ण-बाल-माधुरी**-सटीक, सचित्र, पृष्ठ २९६, मूल्य ... .८७
६-**श्रीकृष्ण-माधुरी**-सटीक, सचित्र, पृष्ठ २८८, ... १.००
७-**अनुराग-पदावली**-सटीक, सचित्र, पृष्ठ २७२, मूल्य ... १.००
८-**कवितावली**-सटीक, सचित्र, पृष्ठ २२४, मूल्य ... .५६
९-**दोहावली**-सटीक, सचित्र, पृष्ठ १९६, मूल्य ... .५०
१०-**रामाज्ञा-प्रश्न**-सटीक, पृष्ठ १०४, मूल्य ... .३७
११-**श्रीकृष्ण-गीतावली**-सटीक, पृष्ठ ८०, मूल्य ... .३१
१२-**जानकी-मङ्गल**-सटीक, पृष्ठ ५२, मूल्य ... .२०
१३-**श्रीपार्वती-मङ्गल**-सटीक, पृष्ठ ४०, मूल्य ... .१२
१४-**वैराग्य-संदीपनी**-सटीक, सचित्र, पृष्ठ २४, मूल्य ... .१२
१५-**बरवै रामायण**-सटीक, पृष्ठ २४, मूल्य ... .१२
१६-**हनुमान-बाहुक**-सटीक, सचित्र, पृष्ठ ४०, मूल्य ... .१०
१७-**भजन-संग्रह** भाग १ से भाग ५ तक, प्रत्येकका मूल्य .१२, मूल्य .६०
१८-**हनुमान-चालीसा**-पृष्ठ ३२, मूल्य ... .०६
१९-**श्रीराधा-माधव-रस-सुधा**-सटीक, पृष्ठ ३६, मूल्य ...
२०-**हरेरामभजन**-२माला, मूल्य
२१-**सीतारामभजन**-पृष्ठ ६४, मू
२२-**विनय-पत्रिकाके बीस पद**-
२३- ,, ,, **पंद्रह**
२४-**श्रीहरिसंकीर्तनधुन**-पृष्ठ ८, ... .०२

पता—**गीताप्रेस, पो० गीताप्रेस (गोरखपुर)**

Library IIAS, Shimla
H 811 23 T 829 B
00034152
34159

श्रीहरिः

श्रीमद्गोस्वामी तुलसीदासजी

रचित

बरवै रामायण

(सरल भावार्थसहित)

H
811.23 T 829 B

अनुवादक—श्रीसुदर्शनसिंह

CATALOGUED

मुद्रक तथा प्रकाशक
मोतीलाल जालान
गीताप्रेस, गोरखपुर

Motilal Jalan
Gorakhpur

Library IIAS, Shimla
H 811.23 T 829 B
00034152

सं० २०१४ से २०१६ तक २०,०००
सं० २०१९ तृतीय संस्करण १०,०००
कुल ३०,०००

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
Acc. No. 34152
Date 4·3·70

मूल्य .१२ (बारह नये पैसे)

H
811.23
T829 B

पता—गीताप्रेस, पो० गीताप्रेस (गोरखपुर)

पुस्तक-परिचय

बरवै रामायण या बरवा रामायणके नामसे दो छपे ग्रन्थ मिलते हैं। दोनों ही गोस्वामी तुलसीदासजीके रचे माने जाते हैं, यद्यपि दोनोंकी रचनामें पर्याप्त अन्तर दृष्टिगोचर होता है।

जो बरवै रामायण काशी नागरी प्रचारिणीसे छपी तुलसी-ग्रन्थावलीमें दी गयी है, वही सर्वसाधारणमें प्रचलित है। हमने भी उसीको प्रामाणिकरूपमें स्वीकार किया है। उसमें कुल ६९ बरवा छन्द हैं। इसके भी दो पाठ-भेद मिलते हैं। एक पाठ बाबू बैजनाथजीकी टीकाके अनुसार है और दूसरा श्रीवन्दनपाठकजीकी टीकाके अनुसार। दोनोंमें जो अन्तर है, वह वस्तुतः पुस्तकके बालकाण्डके केवल १९ छन्दोंके क्रमके सम्बन्धमें ही है। शेष काण्डोंका पाठ दोनों टीकाओंमें एक-जैसा है। काशी नागरी प्रचारिणीकी प्रतिमें बाबू बैजनाथजीकी टीका-के अनुसार छन्दोंका क्रम रखा गया है; किन्तु इस अनुवादमें हमने श्रीवन्दनपाठकजीके अनुसार क्रम रखा है।

बरवै रामायणके इन ६९ छन्दोंको देखनेसे स्पष्ट हो जाता है कि गोस्वामी तुलसीदासजीकी यह स्फुट रचना है और छन्दों-को क्रम देनेका काम पीछे किसीने किया है। बालकाण्डके छन्दोंमें पहिले श्रीजानकीजीका वर्णन करके जानकी-विवाहकी चर्चाके पश्चात् श्रीरामके शैशवका वर्णन करनेवाले छन्दोंको रखनेकी अपेक्षा श्रीरामके शैशवका वर्णन करके तब श्रीजानकीजीका वर्णन एवं उनके मिलनकी चर्चा करनेका क्रम अधिक युक्तियुक्त जान पड़ता है और यही क्रम श्रीवन्दनपाठकजीने माना है; इससे हमने भी उन्हींका क्रम लिया है और उस क्रमके अनुरूप ही अर्थ किया है। आशा है गोस्वामीजीके प्रेमियों तथा श्रीरामभक्तोंको इससे प्रसन्नता होगी।

—अनुवादक

॥ श्रीहरिः ॥

बरवै रामायण

बालकाण्ड

बड़े नयन कुटि भृकुटी भाल बिसाल।
तुलसी मोहत मनहि मनोहर बाल ॥ १ ॥

गोस्वामी तुलसीदासजी कहते हैं कि (बालक श्रीरामके) नेत्र बड़े-बड़े हैं, भौंहें टेढ़ी हैं, ललाट विशाल (चौड़ा) है; यह मनोहर बालक मनको मोह लेता है ॥ १ ॥

कुंकुम तिलक भाल श्रुति कुंडल लोल।
काकपच्छ मिलि सखि कस लसत कपोल ॥ २ ॥

(अयोध्याके राजभवनकी स्त्रियाँ कहती हैं—) सखी ! (श्रीरामके) ललाटपर केसरका तिलक है, कानोंमें चञ्चल कुण्डल हैं और जुल्फोंसे मिलकर गोल-गोल गाल कैसे सुशोभित हो रहे हैं ॥ २ ॥

भाल तिलक सर सोहत भौंह कमान।
मुख अनुहरिया केवल चंद समान ॥ ३ ॥

मस्तकपर तिलककी रेखा बाणके समान शोभा दे रही है और भौंहें धनुषके समान हैं। मुखकी तुलनामें तो अकेला (पूर्णिमाका) चन्द्रमा ही आ सकता है ॥ ३ ॥

तुलसी बंक बिलोकनि मृदु मुसुकानि।
कस प्रभु नयन कमल अस कहौं बखानि ॥ ४ ॥

तुलसीदासजी कहते हैं कि (श्रीरामकी) चितवन तिरछी है, मन्द-मन्द मुसकान उनके ओठोंपर खेल रही है । प्रभुके नेत्रोंको कमलके समान कहकर कैसे वर्णन करूँ; (क्योंकि ये नेत्र तो नित्य प्रफुल्लित रहते हैं और कमल रात्रिमें कुम्हला जाता है ।) ॥ ४ ॥

चढ़त दसा यह उतरत जात निदान ।
कहौं न कबहूँ करकस भौंह कमान ॥ ५ ॥

(श्रीरामकी) भौंहोंको मैं कभी भी कठोर धनुषके समान नहीं कहूँगा; क्योंकि उस धनुषकी दशा यह है कि वह एक बार (शत्रुके साथ मुठभेड़ होनेपर) तो तन जाता है और अन्तमें (काम होनेपर—प्रत्यञ्चासे हाथ हटा लिये जानेपर क्रमशः) उतरता जाता (ढीला कर दिया जाता) है । (इधर प्रभुकी भौंहें कोमल हैं तथा सदा बाँकी रहती हैं ।) ॥ ५ ॥

काम रूप सम तुलसी राम सरूप ।
को कबि समसरि करै परै भवकूप ॥ ६ ॥

तुलसीदासजी कहते हैं कि ऐसा कौन कवि है, जो श्रीरामके स्वरूपकी तुलना कामदेवके रूपसे करके (इस अपराधसे) संसार-रूपी कुएँ (आवागमनके चक्र) में पड़ेगा ॥ ६ ॥

साधु सुसील सुमति सुचि सरल सुभाव ।
राम नीति रत काम कहा यह पाव ॥ ७ ॥

श्रीराम साधु (परम सज्जन), उत्तम शीलसम्पन्न, उत्तम बुद्धिवाले, पवित्र, सरल स्वभावके तथा न्यायपरायण हैं; भला कामदेव यह (सब) कहाँ पा सकता है ॥ ७ ॥

सींक धनुष हित सिखन सकुचि प्रभु लीन ।
मुदित माँगि इक धनुही नृप हँसि दीन ॥ ८ ॥

संकोचके साथ प्रभुने (धनुष चलाना) सीखनेके लिये (हाथमें) एक तिनकेका धनुष लिया। (यह देख) प्रसन्न होकर महाराज दशरथने एक धनुही (नन्हा धनुष) मँगाकर हँसकर उन्हें दिया ॥ ८ ॥

केस मुकुत सखि मरकत मनिमय होत।
हाथ लेत पुनि मुकुता करत उदोत ॥ ९ ॥

(श्रीरामरूपका वर्णन करनेके अनन्तर अब श्रीजानकीजीके रूपका वर्णन करते हैं। जनकपुरकी स्त्रियाँ परस्पर कह रही हैं—) सखी ! (श्रीजनककुमारीके) केशोंमें गूँथे जानेपर (उनका नीले रंगकी झाईं पड़नेसे) मोती मरकत-मणि (पन्ने) के बने हुए (हरे) प्रतीत होते हैं; किंतु फिर हाथमें लिये जानेपर वे श्वेत आभा बिखेरने लगते हैं ॥ ९ ॥

सम सुबरन सुषमाकर सुखद न थोर।
सीय अंग सखि कोमल कनक कठोर ॥ १० ॥

सखी ! स्वर्ण शोभा (कान्ति) में तो श्रीजानकीके श्रीअङ्गोंके समान है, किंतु उनकी तुलनामें थोड़ा भी सुखदायी (शीतल) नहीं है और श्रीजानकीके अङ्ग कोमल हैं, पर स्वर्ण कठोर है ॥ १० ॥

सिय मुख सरद कमल जिमि किमि कहि जाइ।
निसि मलीन वह निसि दिन यह बिगसाइ ॥ ११ ॥

श्रीसीताजीका मुख शरद् ऋतुके कमलके समान कैसे कहा जाय; क्योंकि वह (कमल) तो रात्रिमें म्लान हो जाता है, किंतु यह (श्रीमुख) रात-दिन (समान रूपसे) प्रफुल्लित रहता है ॥ ११ ॥

चंपक हरवा अंग मिलि अधिक सोहाइ।
जानि परै सिय हियरें जब कुंभिलाइ ॥ १२ ॥

चम्पाके पुष्पकी माला श्रीजानकीजीके अङ्गसे सटकर बहुत शोभा देती है; किंतु (वह उनके शरीरकी कान्तिमें ऐसी मिल जाती है कि) उनके हृदयपर माला है, यह पता तब लगता है जब वह कुम्हिला जाती (कुछ सूख जाती) है ॥ १२ ॥

सिय तुव अंग रंग मिलि अधिक उदोत।
हार बेल पहिरावौं चंपक होत ॥ १३ ॥

(सखी श्रीजानकीजीसे ही कहती है—) 'जानकी ! तुम्हारे शरीरके रंगसे मिलकर पुष्पहार अधिक प्रकाशित होता है; और तो और, (तुम्हारे अङ्गकी स्वर्णकान्तिके कारण) बेला (मोगरा) के पुष्पोंकी माला मैं (तुम्हें) पहनाती हूँ तो वह भी चम्पाके पुष्पकी माला जान पड़ती है ॥ १३ ॥

नित्य नेम कृत अरुन उदय जब कीन।
निरखि निसाकर नृप मुख भए मलीन ॥ १४ ॥

(अब श्रीजानकी-स्वयंवरका वर्णन करते हैं । जनकपुरमें स्वयंवरके दिन प्रातःकाल श्रीराम-लक्ष्मणने) जब अरुणोदय हुआ, तब नित्य-नियम (संध्यादि) किया । उन्हें देखकर चन्द्रमाके समान (दूसरे आगत) राजाओंके मुख कान्तिहीन हो गये ॥ १४ ॥

कमठ पीठ धनु सजनी कठिन अँदेस।
तमकि ताहि ए तोरिहिं कहब महेस ॥ १५ ॥

(स्वयंवर-सभामें जनकपुरकी नारियाँ श्रीरामको देखकर परस्पर कह रही हैं–) सखी ! यही संदेहकी बात है कि धनुष कछुएकी पीठके समान कठोर है । (तब दूसरी सखी कहती है—) उसे ये बड़े तपाकके साथ तोड़ देंगे, स्वयं शंकरजी (अपने धनुषको टूट जानेको) कह देंगे ॥ १५ ॥

नृप निरास भए निरखत नगर उदास।
धनुष तोरि हरि सब कर हरेउ हरास॥ १६॥

समस्त नरेश (धनुष तोड़नेमें असफल होकर) निराश हो गये। (इससे) पूरा नगर (समस्त जनकपुरवासियोंका समुदाय) उदास दिखायी देने लगा। तब श्रीरामने धनुषको तोड़कर सबका दुःख (चिन्ता) दूर कर दिया॥ १६॥

का घूँघट मुख मूदहु नवला नारि।
चाँद सरग पर सोहत यहि अनुहारि॥ १७॥

(विवाहके अनन्तर राजभवनमें सखियाँ श्रीजानकीजी और श्रीरामके मिलनके समय श्रीजानकीजीसे कहती हैं—) 'हे नवीना(मुग्धा) नारी! घूँघटसे मुख क्यों छिपा रही हो, इसीके-जैसा चन्द्रमा आकाशमें शोभित है (उसे तो सब देखते ही हैं।)॥ १७॥

गरब करहु रघुनंदन जनि मन माहँ।
देखहु आपनि मूरति सिय कै छाहँ॥ १८॥

(फिर सखियाँ श्रीरामसे विनोद करती कहती हैं—) रघुनन्दन! तुम अपने मनमें (अपने सौन्दर्यका) गर्व मत करो। तुम्हारी मूर्ति (साँवली होनेके कारण) श्रीजानकीजीकी छायाके समान है यह देख लो॥ १८॥

उठीं सखीं हँसि मिस करि कहि मृदु बैन।
सिय रघुबर के भए उनीदे नैन॥ १९॥

(विनोदके अनन्तर) सखियाँ हँसकर यह कोमल वाणी कहती हुई जानेका बहाना बनाकर उठीं कि 'श्रीजानकी और रघुनाथजीके नेत्र अब नींदसे भर गये हैं।' (इन्हें अब सोने देना चाहिये।)॥ १९॥

अयोध्याकाण्ड

सात दिवस भए साजत सकल बनाउ।
का पूछहु सुठि राउर सरल सुभाउ ॥ २० ॥

(मन्थरा महारानी कैकेयीजीसे कहती है कि श्रीरामके राज्याभिषेकके लिये)सब प्रकारकी तैयारियाँ करते—साज सजाते (महाराजको) सात दिन हो गये हैं ! (आप अब) क्या पूछती हैं, आपका स्वभाव बहुत ही सीधा है ॥ २० ॥

राजभवन सुख बिलसत सिय सँग राम।
बिपिन चले तजि राज सो बिधि बड़ बाम ॥ २१ ॥

श्रीराम राजभवनमें श्रीजानकीके साथ (नाना प्रकारके) सुख भोग रहे थे; किंतु वही राज्य छोड़कर वनके लिये चल पड़े ! विधाताकी बड़ी ही विपरीत चाल है ॥ २१ ॥

कोउ कह नर नारायन हरि हर कोउ।
कोउ कह बिहरत बन मधु मनसिज दोउ ॥ २२ ॥

(मार्गमें श्रीराम-लक्ष्मणको देखनेपर) कोई कहता है कि 'ये नर और नारायण ऋषि हैं', कोई कहता है, 'ये विष्णु और शिव हैं' और कोई कहता है कि 'वनमें वसन्त और कामदेव दोनों विहार कर रहे हैं' ॥ २२ ॥

तुलसी भइ मति बिथकित करि अनुमान।
राम लखन के रूप न देखेउ आन ॥ २३ ॥

तुलसीदासजी कहते हैं कि (मार्गवासियोंकी) बुद्धि अनुमान करते-करते थक गयी, श्रीराम-लक्ष्मणके समान दूसरा कोई (देवतादिका) रूप नहीं दिखायी पड़ा ॥ २३ ॥

तुलसी जनि पग धरहु गंग महँ साँच।
निगानाँग करि नितहिं नचाइहि नाच ॥ २४ ॥

तुलसीदासजी (केवटके शब्दोंको दुहराते प्रभुसे) कहते हैं—'गङ्गामें (खड़े होकर मैं) सच कह रहा हूँ कि (आप मेरी नौका-पर) चरण मत रखें, (नहीं तो नौका स्त्रीके रूपमें बदल जायगी और मेरी स्त्री मुझे एक और स्त्रीके साथ देखकर) नित्य ही सर्वथा नंगा करके नाच नचाया करेगी' ॥ २४ ॥

सजल कठौता कर गहि कहत निषाद।
चढ़हु नाव पग धोइ करहु जनि बाद ॥ २५ ॥

निषाद हाथमें जल-भरा कठौता लेकर (प्रभुसे) कहता है—'चरण धोकर नौकापर चढ़िये, तर्क-वितर्क मत कीजिये' ॥ २५ ॥

कमल कंटकित सजनी कोमल पाइ।
निसि मलीन यह प्रफुलित नित दरसाइ ॥ २६ ॥

(ग्राम-नारियाँ श्रीराम-लक्ष्मण तथा जानकीजीको मार्गमें जाते देखकर कहती हैं—) सखी ! कमल तो काँटोंसे युक्त होता है, इनके चरण तो (उससे भी) कोमल हैं। (इतना ही नहीं,) वह रात्रिमें म्लान (बंद) हो जाता है, ये नित्य प्रफुल्लित दीखते हैं ॥ २६ ॥

वाल्मीकिवचन

द्वै भुज करि हरि रघुबर सुंदर बेष।
एक जीभ कर लछिमन दूसर सेष ॥ २७ ॥

महर्षि वाल्मीकिजीने कहा—'सुन्दर वेषधारी श्रीरघुनाथजी द्विभुज विष्णु हैं और लक्ष्मणजी एक जिह्वावाले दूसरे शेषनाग हैं' ॥ २७ ॥

अरण्यकाण्ड

वेद नाम कहि अँगुरिन खंडि अकास।
पठयो सूपनखाहि लखन के पास ॥ २८ ॥

(चार) अँगुलियोंसे (चार) वेदोंका नाम कहकर (श्रुतिवाचक कानोंका संकेत करके) और आकाशमें काटनेका संकेत करके (उन्हें काट दो, यह सूचित करके प्रभुने) शूर्पणखाको लक्ष्मणजीके पास भेज दिया ॥ २८ ॥

हेमलता सिय मूरति मृदु मुसुकाइ।
हेम हरिन कहँ दीन्हेउ प्रभुहि दिखाइ ॥ २९ ॥

स्वर्णलताकी मूर्तिके समान सीताजीने कोमलतापूर्वक (किंचित्) मुसकराकर प्रभुको सोनेका मृग दिखला दिया ॥ २९ ॥

जटा मुकुट कर सर धनु संग मरीच।
चितवनि बसति कनखियनु अँखियनु बीच ॥ ३० ॥

जटाओंका मुकुट बनाये, हाथमें धनुष-बाण लिये मारीचके साथ दौड़ते एवं (पीछेसे जानकीकी ओर) तिरछी दृष्टिसे देखते हुए प्रभुकी यह चितवनि (गोस्वामी तुलसीदासजी कहते हैं कि श्रीजानकीजीके) नेत्रोंके मध्य निवास करती है (वे सदा उसी चितवनका चिन्तन करती रहती हैं।) ३०

रामवाक्य

कनक सलाक कला ससि दीप सिखाउ।
तारा सिय कहँ लछिमन मोहि बताउ ॥ ३१ ॥

(जानकी-हरणके पश्चात्) श्रीराम कहते हैं—'लक्ष्मण! सोनेकी शलाका, चन्द्रमाकी कला, दीपककी शिखा अथवा नक्षत्रके समान (ज्योतिर्मयी) सीता कहाँ हैं? मुझे यह बता दो ॥ ३१॥

सांय बरन सम केतकि अति हियँ हारि।
कहेसि भँवर कर हरवा हृदय बिदारि ॥ ३२ ॥

'श्रीसीताके वर्ण (रूप) के साथ समता करते हुए चित्तमें अत्यन्त निराश होकर केतकी-पुष्पने अपना हृदय फाड़ दिया और (कलङ्कके रूपमें) भौंरोंकी (काली) माला बना (पहिन) ली ॥ ३२ ॥

सीतलता ससि की रहि सब जग छाइ।
अगिनि ताप है हम कहँ सँचरत आइ ॥ ३३ ॥

'चन्द्रमाकी शीतलता समस्त संसारमें व्याप्त हो रही है; किंतु वही (श्रीजानकीके वियोगसे तपे हुए) हमारे शरीरमें लगकर अग्निका-सा ताप धारण कर लेती है' ॥ ३३ ॥

किष्किन्धाकाण्ड

स्याम गौर दोउ मूरति लछिमन राम।
इन तें भइ सित कीरति अति अभिराम ॥ ३४ ॥

(श्रीहनुमान्‌जी सुग्रीवसे परिचय कराते हुए कहते हैं—) 'ये साँवले तथा गोरे शरीरवाले दोनों भाई श्रीराम और लक्ष्मण हैं। कीर्ति (की अधिष्ठात्री देवी) भी इनके द्वारा उज्ज्वल तथा अत्यन्त मनोहर हुई है (इनकी कीर्ति तो कीर्तिको भी उज्ज्वल करनेवाली है।)' ॥ ३४ ॥

कुजन पाल गुन बर्जित अकुल अनाथ।
कहहु कृपानिधि राउर कस गुन गाथ ॥ ३५ ॥

(सुग्रीव श्रीरघुनाथजीसे कहते हैं—) 'कृपानिधान ! आपके गुणोंका कैसे वर्णन करूँ—आप (मेरे-जैसे) दुर्जन, गुणरहित, कुलहीन तथा अनाथका पालन करनेवाले हैं' ॥ ३५ ॥

विरह आगि उर ऊपर जब अधिकाइ।
ए अँखियाँ दोउ बैरिनि देहिं बुझाइ ॥ ३६ ॥

(श्रीजानकीजी कहती हैं—) 'हृदयमें जब वियोगकी अग्नि भड़क उठती है, तब मेरी शत्रु ये दोनों आँखें (आँसू बहाकर) उसे बुझा देती हैं (उस अग्निमें मुझे जल नहीं जाने देतीं ।) ॥ ३६ ॥

डहकनि है उजिअरिया निसि नहिं घाम।
जगत जरत अस लागु मोहि बिनु राम ॥ ३७ ॥

'यह फैली हुई रात्रिकी चाँदनी नहीं है, (दुःखदायिनी) धूप है । मुझे श्रीरामके बिना (समस्त) जगत् जलता-सा लगता है ॥ ३७ ॥

अब जीवन कै है कपि आस न कोइ।
कनगुरिया कै मुदरी कंकन होइ ॥ ३८ ॥

'हनुमान् ! अब जीवित रहनेकी कोई आशा नहीं है । (तुम देखते ही हो कि) कनिष्ठिका अँगुलीकी अँगूठी अब कंगन बन गयी (उसे हाथमें कंगनके समान पहिन सकती हूँ, इतना दुर्बल शरीर हो गया है ।) ॥ ३८ ॥

राम सुजस कर चहुँ जुग होत प्रचार।
असुरन कहँ लखि लागत जग अँधियार ॥ ३९ ॥

'श्रीरामके सुयशका प्रचार चारों युगोंमें होता है; किंतु असुरों-को देखकर लगता है कि संसारमें अँधेरा (अन्याय ही व्याप्त) है (अर्थात् इस समय श्रीरामका यश राक्षसोंके अत्याचारमें छिप गया है ।)' ॥ ३९ ॥

सिय वियोग दुख केहि बिधि कहउँ बखानि ।
फूल बान ते मनसिज बेधत आनि ॥ ४० ॥

(हनुमान्‌जी श्रीरामजीसे कहते हैं—) 'श्रीजानकीजीके दुःखका वर्णन किस प्रकार करूँ । कामदेव आकर उन्हें (अपने) पुष्पबाणसे बींधता रहता है ॥ ४० ॥

सरद चाँदनी सँचरत चहुँ दिसि आनि ।
बिधुहि जोरि कर बिनवति कुलगुरु जानि ॥ ४१ ॥

'जब शरद् ऋतुके चन्द्रमाकी चाँदनी प्रकट होकर चारों दिशाओंमें (सब ओर) फैल जाती है, तब (वह श्रीजानकीजीको सूर्यकी धूपके समान ऐसी उष्ण लगती है कि) चन्द्रमाको अपने कुल (सूर्यवंश) का प्रवर्तक (सूर्य) समझकर हाथ जोड़कर (उससे) प्रार्थना करती हैं' ॥ ४१ ॥

लङ्काकाण्ड

बिबिध बाहिनी बिलसति सहित अनंत ।
जलधि सरिस को कहै राम भगवंत ॥ ४२ ॥

श्रीलक्ष्मणजीके साथ (वानर-भालुओंकी) नाना प्रकारकी सेना शोभा पा रही है । (वह इतनी विशाल है कि दूसरे समुद्रके समान प्रतीत होती है ।) किंतु (जिसमें लक्ष्मणके रूपमें साक्षात् भगवान् अनन्त विराजमान थे और जो स्वयं भगवान् श्रीरामकी सेना थी) उसे (प्राकृत) समुद्रके समान कौन कहे । (समुद्र तो ससीम है, असीम भगवान्‌की सेना भी असीम ही होनी चाहिये ।) ४२

चित्रकूट पय तीर सो सुरतरु बास ।
लखन राम सिय सुमिरहु तुलसीदास ॥ ४३ ॥

चित्रकूटमें पयस्विनी नदीके किनारे (किसी वृक्षके नीचे) रहना कल्पवृक्षके नीचे (स्वर्गमें) रहनेके समान है । तुलसीदासजी (अपने मनसे) कहते हैं—अरे मन ! यहाँ श्रीराम-लक्ष्मण एवं जानकीजीका स्मरण करो ॥ ४३ ॥

पय नहाइ फल खाहु परिहरिय आस ।
सीय राम पद सुमिरहु तुलसीदास ॥ ४४ ॥

तुलसीदासजी कहते हैं—अरे मन ! पयस्विनी नदीमें स्नान करके फल खाकर रहो, सब प्रकारकी आशाओंको छोड़ दो और (केवल) श्रीसीता-रामजीके चरणोंका स्मरण करो ॥ ४४ ॥

स्वारथ परमारथ हित एक उपाय ।
सीय राम पद तुलसी प्रेम बढ़ाय ॥ ४५ ॥

तुलसीदासजी कहते हैं—अरे मन ! स्वार्थ (लौकिक हित) तथा परमार्थ (आत्मकल्याण) के लिये एक ही उपाय है कि श्रीसीता-रामजीके चरणोंमें प्रेम बढ़ाओ ॥ ४५ ॥

काल कराल विलोकहु होइ सचेत ।
राम नाम जपु तुलसी प्रीति समेत ॥ ४६ ॥

तुलसीदासजी कहते हैं—अरे मन ! सावधान होकर भयंकर काल (मृत्यु) को (समीप) देखो और प्रेमपूर्वक श्रीराम-नामका जप करो ॥ ४६ ॥

संकट सोच विमोचन मंगल गेह ।
तुलसी राम नाम पर करिय सनेह ॥ ४७ ॥

तुलसीदासजी कहते हैं—अरे मन ! सब प्रकारके संकट एवं शोकको नष्ट करनेवाले तथा सम्पूर्ण मङ्गलोंके निकेतन श्रीराम-नामसे प्रेम करना चाहिये ॥ ४७ ॥

कलि नहिं ग्यान बिराग न जोग समाधि।
राम नाम जपु तुलसी नित निरुपाधि ॥ ४८ ॥

तुलसीदासजी कहते हैं—अरे मन ! कलियुगमें न ज्ञान सम्भव है न वैराग्य, न योग ही सध सकता है, फिर समाधिकी तो कौन कहे। (अतः इस युगमें) नित्य (सर्वदा) विघ्नरहित राम-नामका जप करो ४८

राम नाम दुइ आखर हियँ हितु जानु।
राम लखन सम तुलसी सिखव न आनु ॥ ४९ ॥

तुलसीदासजी कहते हैं—अरे मन ! राम-नामके दो अक्षरोंको राम-लक्ष्मणके समान हृदयसे (अपना) हितकारी समझो । और किसी शिक्षाको मनमें स्थान मत दो ॥ ४९ ॥

माय बाप गुरु स्वामि राम कर नाम।
तुलसी जेहि न सोहाइ ताहि बिधि बाम ॥ ५० ॥

तुलसीदासजी कहते हैं—अरे मन ! रामका नाम ही (तुम्हारे लिये) माता, पिता, गुरु और स्वामी है। जिसे यह अच्छा न लगे, उसके लिये विधाता प्रतिकूल है (जन्म-मरणके चक्रमें भटकना ही उसके भाग्यमें बदा है।) ॥ ५० ॥

राम नाम जपु तुलसी होइ बिसोक।
लोक सकल कल्यान नीक परलोक ॥ ५१ ॥

तुलसीदासजी कहते हैं—अरे मन ! शोक (चिन्ता)-रहित होकर राम-नामका जप करो। इससे इस लोकमें सब प्रकारसे कल्याण और परलोकमें भी भला होगा ॥ ५१ ॥

तप तीरथ मख दान नेम उपवास।
सब ते अधिक राम जपु तुलसीदास ॥ ५२ ॥

तुलसीदासजी कहते हैं—अरे मन ! जो तपस्या, तीर्थयात्रा, यज्ञ, दान, नियम-पालन, उपवास आदि सबसे अधिक (फलदाता) है, उस राम-नामका जप करो ॥ ५२ ॥

महिमा राम नाम कै जान महेस ।
देत परम पद कासीं करि उपदेस ॥ ५३ ॥

श्रीराम-नामकी महिमा शङ्करजी जानते हैं, जो काशीमें (मरते हुए प्राणीको) उसका उपदेश करके परम पद (मोक्ष) देते हैं ॥ ५३ ॥

जान आदि कबि तुलसी नाम प्रभाउ ।
उलटा जपत कोल ते भए रिषि राउ ॥ ५४ ॥

तुलसीदासजी कहते हैं कि आदिकवि वाल्मीकिजीने राम-नामका प्रभाव जाना था, जिसका उलटा जप करके वे कोल (व्याध) से ऋषिराज हो गये ॥ ५४ ॥

कलसजोनि जियँ जानेउ नाम प्रतापु ।
कौतुक सागर सोखेउ करि जियँ जापु ॥ ५५ ॥

महर्षि अगस्त्यने हृदयसे (राम) नामका प्रताप जाना, जिन्होंने मनमें ही उसका जप करके खेल-ही-खेलमें समुद्रको सोख लिया ॥५५॥

तुलसी सुमिरत राम सुलभ फल चारि ।
बेद पुरान पुकारत कहत पुरारि ॥ ५६ ॥

तुलसीदासजी कहते हैं कि श्रीरामका स्मरण करनेसे ही (अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष——) चारों फल सुलभ हो जाते हैं। (यह बात) वेद-पुराण पुकारकर कहते हैं और शङ्करजी भी कहते हैं ॥ ५६ ॥

राम नाम पर तुलसी नेह निबाहु ।
एहि ते अधिक न एहि सम जीवन लाहु ॥ ५७ ॥

तुलसीदासजी कहते हैं——अरे मन ! राम-नामसे प्रेमका निर्वाह करो। इससे अधिक तो क्या, इसके बराबर भी जीवनका कोई (दूसरा) लाभ नहीं है ॥ ५७ ॥

दोष दुरित दुख दारिद दाहक नाम।
सकल सुमंगल दायक तुलसी राम ॥ ५८ ॥

तुलसीदासजी कहते हैं—अरे मन! राम-नाम समस्त दोषों, पापों, दुःखों और दरिद्रताको जला डालनेवाला तथा सम्पूर्ण श्रेष्ठ मङ्गलोंको देनेवाला है ॥ ५८ ॥

केहि गिनती मह गिनती जस बन घास।
राम जपत भए तुलसी तुलसीदास ॥ ५९ ॥

तुलसीदासजी कहते हैं कि मैं किस गिनतीमें था; मेरी तो वही दशा थी, जो वनकी घासकी होती है, किंतु राम-नामका जप करनेसे वही मैं तुलसी (के समान पवित्र एवं आदरणीय) हो गया! ॥ ५९ ॥

आगम निगम पुरान कहत करि लीक।
तुलसी राम नाम कर सुमिरन नीक ॥ ६० ॥

तुलसीदासजी कहते हैं—तन्त्रशास्त्र, वेद तथा पुराण रेखा खींचकर (निश्चयपूर्वक कहते हैं कि) राम-नाम स्मरण (सबसे) उत्तम है ॥ ६० ॥

सुमिरहु नाम राम कर सेवहु साधु।
तुलसी उतरि जाहु भव उदधि अगाधु ॥ ६१ ॥

तुलसीदासजी कहते हैं—अरे मन! राम-नामका स्मरण करो और सत्पुरुषोंकी सेवा करो। (इस प्रकार) अपार संसार-सागरके पार उतर जाओ ॥ ६१ ॥

कामधेनु हरि नाम कामतरु राम।
तुलसी सुलभ चारि फल सुमिरत नाम ॥ ६२ ॥

तुलसीदासजी कहते हैं कि श्रीरामका नाम कामधेनु है और उनका रूप कल्पवृक्षके समान है। श्रीराम-नामका स्मरण करनेसे ही चारों फल सुलभ हो जाते (सरलतासे मिल जाते) हैं ॥ ६२ ॥

तुलसी कहत सुनत सब समुझत कोय।
बड़े भाग अनुराग राम सन होय ॥ ६३ ॥

तुलसीदासजी कहते हैं कि (श्रीरामसे प्रेम करनेकी बात) कहते-सुनते तो सब हैं, किंतु समझता (आचरणमें लाता) कोई ही है। बड़ा सौभाग्य (उदय) होनेपर श्रीरामसे प्रेम होता है ॥ ६३ ॥

एकहि एक सिखावत जपत न आप।
तुलसी राम प्रेम कर बाधक पाप ॥ ६४ ॥

(लोग) एक दूसरेको (नाम-जपकी) शिक्षा तो देते हैं, किंतु स्वयं जप नहीं करते। तुलसीदासजी कहते हैं कि श्रीरामके प्रेममें बाधा देनेवाला उनका पाप ही है ॥ ६४ ॥

मरत कहत सब सब कहँ सुमिरहु राम।
तुलसी अब नहिं जपत समुझि परिनाम ॥ ६५ ॥

तुलसीदासजी कहते हैं कि सब लोग सभी मरणासन्न व्यक्तियोंसे कहते हैं—'रामका स्मरण करो', किंतु सबका परिणाम (निश्चित मृत्यु है यह) समझकर अभी (जीवनकालमें ही नामका) जप नहीं करते ॥ ६५ ॥

तुलसी राम नाम जपु आलस छाँडु।
राम बिमुख कलि काल को भयो न भाँडु ॥ ६६ ॥

तुलसीदासजी कहते हैं कि आलस्यको छोड़ दो और राम-

नामका जप करो। रामसे विमुख होकर इस कलियुगमें कौन भाँड़ (नाना रूप बनाकर बहुरूपियेके समान घूमनेको विवश) नहीं हुआ ॥ ६६ ॥

तुलसी राम नाम सम मित्र न आन।
जो पहुँचाव राम पुर तनु अवसान ॥ ६७ ॥

तुलसीदासजी कहते हैं कि राम-नामके समान दूसरा कोई मित्र नहीं है, जो शरीरका अन्त होनेपर (जीवको) श्रीरामके धाममें पहुँचा देता है ॥ ६७ ॥

राम भरोस नाम बल नाम सनेहु।
जनम जनम रघुनंदन तुलसी देहु ॥ ६८ ॥

(प्रार्थना करते हुए गोस्वामीजी कहते हैं—) हे रघुनाथजी ! इस तुलसीदासको तो जन्म-जन्ममें अपना भरोसा, अपने नामका बल और अपने नाममें प्रेम दीजिये ॥ ६८ ॥

जनम जनम जहँ जहँ तनु तुलसिहि देहु।
तहँ तहँ राम निबाहिब नाथ सनेहु ॥ ६९ ॥

आप जन्म-जन्ममें जहाँ-जहाँ (जिस-जिस योनिमें) तुलसीदास-को शरीर-धारण करायें, वहाँ-वहाँ हे मेरे स्वामी श्रीराम ! मेरे साथ स्नेहका निर्वाह करें (मुझपर स्नेह रखें) ॥ ६९ ॥

॥ बरवै रामायण समाप्त ॥

INSTITUTE OF ADVANCED ST
34152
4·3·70

श्रीरामचरितमानसके मूल तथा सटीक संस्करण

श्रीरामचरितमानस—मोटा टाइप, बृहदाकार भाषाटीकासहित, रंगीन चित्र ८, पृष्ठ ९८४, सजिल्द, मूल्य ... १५.००

श्रीरामचरितमानस—मोटा टाइप, सानुवाद, रंगीन चित्र ८, पृष्ठ १२००, सजिल्द, मूल्य ७.५०

श्रीरामचरितमानस—बड़े अक्षरोंमें केवल मूल पाठ, रंगीन चित्र ८, पृष्ठ ५१६, सजिल्द, मूल्य ४.००

श्रीरामचरितमानस—सटीक, मझला साइज, महीन टाइप, रंगीन चित्र ८, पृष्ठ १००८, सजिल्द, मूल्य ३.५०

श्रीरामचरितमानस—पाठभेदसहित, केवल मूल पाठ, पृष्ठ ८००, सचित्र, मू० ३.००

श्रीरामचरितमानस—मूल, मझला साइज, पृष्ठ ६०८, सचित्र, मूल्य २.००

श्रीरामचरितमानस—मूल, गुटका, पृष्ठ-संख्या ६८८, श्रीरामदरबारका चित्र और ७ लाइन ब्लाक, सजिल्द, मूल्य ... .७५

श्रीरामचरितमानस—बालकाण्ड—मूल, पृष्ठ १९२, सचित्र, मूल्य .६२

,, ,, —सटीक, पृष्ठ ३१२, सचित्र, मूल्य १.१२

,, अयोध्याकाण्ड—सटीक, पृष्ठ २६४, सचित्र, मूल्य .८१

,, अरण्यकाण्ड—मूल, पृष्ठ ४०, मूल्य ... .२०

,, ,, —सटीक, पृष्ठ ६४, मूल्य ... .२५

,, किष्किन्धाकाण्ड—सटीक, पृष्ठ ३६, मूल्य ... .१२

,, सुन्दरकाण्ड—सटीक, पृष्ठ ६०, मूल्य ... .२५

,, लंकाकाण्ड—मूल, पृष्ठ ८२, मूल्य ... .२५

,, ,, —सटीक, पृष्ठ १३२, मूल्य ... .५०

,, उत्तरकाण्ड—सटीक, पृष्ठ १४४, मूल्य ... .५०

पता—**गीताप्रेस, पो० गीताप्रेस (गोरखपुर)**

गोस्वामी श्रीतुलसीदासजीके कुछ ग्रन्थ

श्रीरामचरितमानस [बड़ा]—सटीक, टीकाकार—श्रीहनुमान-प्रसाद पोद्दार, मोटा टाइप, पृष्ठ-संख्या १२००, आठ बहुरंगे चित्र, कपड़ेकी जिल्द, मूल्य ७.५०

श्रीरामचरितमानस—बड़े अक्षरोंमें केवल मूल पाठ, रंगीन चित्र ८, पृष्ठ ५१६, मूल्य ४.००

श्रीरामचरितमानस—मझला साइज, भाषा-टीकासहित, रंगीन चित्र ८, पृष्ठ १००८, सजिल्द, मूल्य ३.५०

श्रीरामचरितमानस—मूल, मोटा टाइप, पाठभेदवाली, सचित्र, पृष्ठ ८००, सजिल्द, मूल्य ३.००

श्रीरामचरितमानस—मूल-गुटका, आकार सुपररायल बत्तीस-पेजी, पृष्ठ-संख्या ६८८, हाथके बुने हुए कपड़ेकी सुन्दर जिल्द, श्रीरामदरबारका रंगीन चित्र, मूल्य ... .७५

विनय-पत्रिका—सरल हिंदी-टीकासहित, टीकाकार—श्रीहनुमान-प्रसाद पोद्दार, पदोंका सरल हिंदी भाषामें सबके समझने-योग्य बड़ा ही सुन्दर भावपूर्ण अर्थ लिखा है और अन्तमें (३७ पृष्ठ पदोंमें आये हुए कथाप्रसङ्गके लगाये गये हैं।) पृष्ठ-संख्या ४७२, चित्र १ सुनहरी, मूल्य ... १.००

गीतावली—हिंदी-अनुवादसहित, पुस्तकमें ऐसे-ऐसे अनूठे प्रसङ्ग हैं, जिन्हें गाते-गाते और सुनते-सुनते मन मस्त होकर आनन्दसे विभोर हो जाता है। पृष्ठ ४४४, चित्र १ रंगीन, मूल्य ... १.००

कवितावली—हिंदी-अनुवादसहित, पुस्तकमें श्रीगोस्वामीजी महाराजने रामायणकी तरह ही सात काण्डोंमें श्रीरामलीलाका वर्णन कवित्तमें किया है। पृष्ठ २२४, १ सुन्दर तिरंगा चित्र, मूल्य .५६

दोहावली—भाषानुवादसहित, अनुवादक—श्रीहनुमानप्रसाद पोद्दार। नीति, धर्म, प्रेम, वैराग्य, भक्ति और शिक्षा आदि आध्यात्मिक विषयोंपर करीब पौने छः सौ दोहोंका यह बड़ा ही अनूठा संग्रह है। श्रीराम-चतुष्टयका तिरंगा १ चित्र, पृष्ठ १९६, मू० .५०

पता—**गीताप्रेस, पो० गीताप्रेस (गोरखपुर)**